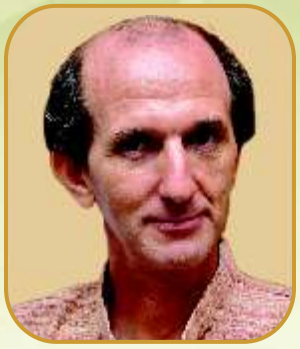

SHRI MICHEL DANINO

Shri Michel Danino is a French- born Indian writer and scholar who dedicated himself to the study of the civilization and culture of India, which he made his home forty years ago. Besides his scholarly and academic activities, he has been active in the fields of education, propagation of Indian culture, and nature conservation.

2. Born in France on June 04, 1956, as a teenager Shri Danino was drawn to Sri Aurobindo and the Mother. After higher scientific studies, he decided to leave for India. He spent five years in Auroville, then over two decades in the Nilgiris, where he participated in the English translation and publication of books related to Sri Aurobindo and Mother, in particular Mother's Agenda (13 volumes), India's Rebirth and India the Mother.

3. Researching the origins of Indian civilization, Shri Danino authored, The Invasion That Never Was, a study of the Aryan problem (2nd ed.,2000), which was expanded in 2006 to a 420-page book in French. A multidisciplinary study of the Vedic Sarasvati river, The Lost River: On the Trail of the Sarasvati (Penguin India), appeared in 2010 and received wide critical and scholarly acclaim. It was followed by an essay, Indian Culture and India's Future (DK Print world , 2011). The Dawn of Indian Civilization and the Elusion Aryans is under preparation. He has also published many scholarly papers on those topics, as also India's scientific and technological heritage, ecological issues, and the challenges faced by Indian culture today.

4. Shri Danino was a scholar-in-residence at IIT Kanpur in February-March 2011 for a lecture series on Science and Technology in Ancient India, and again in August- November 2014 for a series on Exploring Indian Civilization. He taught courses on ancient Indian culture, society and ethics at IIM Ranchi for a few years. In 2011, he became guest professor at IIT Gandhi nagar, where he has been giving courses on aspects of Indian knowledge systems and assisting the creation of an Archaeological Sciences Centre dedicated to the scientific aspects of archaeology.

5. In 2001, Shri Danino convened the International Forum for India's Heritage, which in 2005 conducted for NCERT a major survey of 11,000 school students probing their views on culture and education. He has been coordinating a project to produce a multimedia educational DVD on Science and Technology in Ancient India. Shri Danino was a member of the CBSE course committee on “Knowledge Traditions and Practices of India”, a pioneering elective course for classes XI and XII; he co-edited with Prof. Kapil Kapoor the textbooks for class XI (2013) and class XII (2015).

6. Shri Danino's other interests include environmental conservation, during his stay in the Nilgiris (1982-2003), he worked to preserve an important pocket of Shola forest, which led to the creation of the first public protection committee appointed by the Tamil Nadu Forest Department.

7. Shri Danino adopted Indian citizenship in 2014 and currently lives in a rural area near Coimbatore. He is a member of the Indian Council of Historical Research (appointed in February 2015).

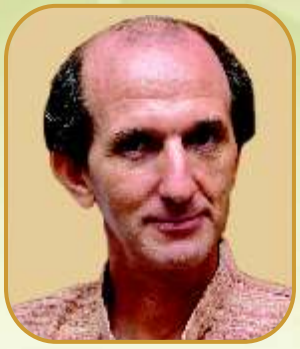

श्री मिशेल दनिनो

श्री मिशेल दनिनो फ्रांस में जन्में ऐसे भारतीय लेखक एवं विद्वान हैं जिन्होंने भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के अध्ययन के क्षेत्र में स्वयं को अर्पित कर दिया है। इन्होंने भारत को 40 वर्ष पहले ही अपना घर बना लिया है। अपने विद्धतापूर्ण एवं शैक्षिक गतिविधियों के अतिरिक्त उन्होंने शिक्षा, भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार एवं प्रकृति संरक्षण के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाई है।

2. आपका जन्म 4 जून, 1956 को फ्रांस में हुआ। किशोर अवस्था में ही आप श्री अरविंद एवं द मदर के प्रति आकर्षित हुए। उच्चतर वैज्ञानिक अध्ययनों के बाद आपने भारत जाने का निर्णय लिया। आपने ओरोविले में पांच वर्ष बिताए, उसके बाद नीलगिरी में दो दशकों तक निवास किया जहां आप श्री अरविंद एवं द मदर से संबंधित पुस्तकों, विशेषत: मदर्स एजेंडा (13 खंड), इंडियाज़ रिवर एंड इंडिया द मदर के अंग्रेजी अनुवाद एवं प्रकाशन के कार्य में शामिल हुए।

3. भारतीय सभ्यता के उद्गम की खोज करते हुए आपने "द इन्वेज़न देट नेवर वॉज़, अ स्टडी ऑफ द आर्यन प्राबलम" (द्वितीय संस्करण सन 2000) पुस्तक की रचना की जिसे वर्ष 2006 में फ्रांसीसी भाषा में विस्तारित कर 420 पृष्ठों की पुस्तक के रूप में संरचित किया गया। द लॉस्ट रिवर: ऑन द ट्रेल ऑफ द सरस्वती (पेंग्विन इंडिया) वैदिक सरस्वती रिवर पर एक बहुआयामी अध्ययन है जिसकी रचना वर्ष 2010 में की गई तथा इस रचना को व्यापक समालोचनात्मक प्रशंसा प्राप्त हुई। इसके बाद आपने इंडियन कल्चर एंड इंडिया फ्यूचर (डीकेप्रिंट वर्ल्ड, 2011) नामक लेख की रचना की। आपके द्वारा द डॉन ऑफ इंडियन सिविलाइज़ेशन एंड एल्यूजन आर्यन अभी रचित की जा रही है। आपने इन विषयों पर तथा भारतीय विज्ञान एवं तकनीकी विरासत, पारस्थितिकी मुद्दों एवं आज भारतीय संस्कृति की चुनौतियों से संबंधित विषयों पर कई विद्वतापूर्ण शोध पत्र भी प्रकाशित किये हैं।

4. आप प्राचीन भारत में विज्ञान एवं तकनीकी पर व्याख्यान श्रृंखला के लिए फरवरी-मार्च, 2011 में भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान कानपुर में स्कॉलर-इन- रेजीडेंस रहे एवं पुन: एक्सप्लोरिंग इंडियन सिविलाइजेशन विषय पर एक व्याख्यान श्रृंखला के लिए अगस्त–नवंबर 2014 में वहां रहे। आपने आई.आई.एम. रांची में प्राचीन भारतीय संस्कृति, समाज एवं आचारशास्त्र विषयों पर पाठ्यक्रमों की शिक्षा दी। वर्ष 2011 में आप भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान गांधीनगर में अतिथि, प्रोफेसर बने जहां आप भारतीय ज्ञान प्रणालियों के पहलुओं से संबंधित पाठयक्रमों की शिक्षा दे रहे हैं तथा पुरातत्व के वैज्ञानिक पहलुओं को समर्पित आर्केलोजिकल सांइसेस सेंटर के निर्माण में अपनी बहुमूल्यी सहायता दे रहे हैं।

5. वर्ष 2001 में आपने भारतीय विरासत के लिए अंतरराष्ट्रीय मंच को संयोजित किया जिसने वर्ष 2005 में एनसीईआरटी के लिए संस्कृति एवं शिक्षा पर 11,000 स्कूली बच्चों के विचारों पर एक बहुत बड़ा सर्वेक्षण किया। आप प्राचीन भारत में विज्ञान एवं तकनीकी से संबंधित मल्टीमीडिया शैक्षणिक डीवीडी तैयार करने में सहायता कर रहे हैं। आप "नोलेज़ ट्रेडिशन्स एंड प्रेक्टिसेस इन इंडिया", जो 11वीं एवं 12वीं कक्षाओं के बच्चों के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण विकल्पीय पाठ्यक्रम है, पर सीबीएसई पाठ्यक्रम समिति के सदस्य हैं; आपने प्रोफेसर कपिल कपूर के साथ मिलकर कक्षा 11वीं (2013) एवं कक्षा 12वीं (2015) की पाठ्यपुस्तकों का सह-लेखन किया है।

6. आपकी रूचि के अन्य विषय हैं, पर्यावरण संरक्षण, नीलगिरि में अपने निवास के दौरान (1982-2003) आपने शोलावन के एक महत्वपूर्ण पॉकेट के संरक्षण के लिए कार्य किया जिसके परिणामस्वरूप तमिलनाडु वन विभाग द्वारा पहली जनसुरक्षा समिति गठित की गई।

7. आपने वर्ष 2014 में भारतीय नागरिकता प्राप्त की एवं वर्तमान में आप कोयंबटूर के निकट ग्रामीण क्षेत्र में निवास कर रहे हैं। आप भारतीय एतिहासिक अनुसंधान परिसर के सदस्य हैं (फरवरी 2015 में नियुक्त)।